चित्र: अतनु राय

एक सुनी-सुनाई कहानी

उल्टे पाँव के जूते

यह कहानी है अर्शी की। अर्शी एक छोटे-से कस्बे में रहती थी। जब वह तीन साल की हुई तो उसकी अम्मी ने उसका जन्मदिन मनाया। जन्मदिन पर उसके कई दोस्त आए। अर्शी ने तय किया था कि पूरे दिन वे सब मिलकर खेलेंगे। बारिशों के दिन थे। उस दिन सबने खूब मज़े किए। जन्मदिन पर सबने अपने-अपने घर से लाया खाना आपस में बाँटकर खाया। किसी के घर की चटनी कमाल की थी तो किसी का अचार और किसी के पराँठे। तस्सू की आलू और छाछ की सब्ज़ी तो इतने कमाल की थी कि एक-एक ग्रास सबने खाई। अर्शी की अम्मी ने सबको रंग-बिरंगे गुब्बारे दिए।

रात हो गई थी। अर्शी अम्मी से चिपककर लेटी थी। अम्मी ने धीरे-से उसके कान में पूछा, "अर्शी, बोलो तुम्हें जन्मदिन पर क्या चाहिए?" अर्शी ने कुछ नहीं कहा बस अम्मी के कान में तेज़ से फूँक मार दी। अम्मी और वो दोनों खिलखिला उठीं। अम्मी ने जब एक बार फिर पूछा कि उसे जन्मदिन पर क्या चाहिए तो अर्शी को एक कहानी याद हो आई। "उल्टे पाँव के जूते" नाम की कहानी। उसने कहा, "अम्मी मुझे उल्टे पाँव के जूते चाहिए।" "यह क्या होता है ..." अम्मी ने उसके कान में फूँककर पूछा। तुम्हें मालूम है उल्टे पाँव के जूतों की कहानी?

नहीं मालूम तो कान लगाकर सुनो। पर हाँ, कान में फूँकना नहीं। तो शुरू करें। जो उकड़ू बैठे हों वे भी और जो खड़े हों वे भी... सब बैठ जाएँ।

बहुत पुरानी बात है। जितनी तुम सोच सको उतनी पुरानी। कुलू नाम का एक बच्चा था। अर्शी की उमर का ही होगा। कुलू की अम्मी ने कुलू से पूछा, "बेटा तुझे जन्मदिन पर क्या तोहफा दूँ?" कुलू को समझ में नहीं आया कि वो क्या माँगे। और जन्मदिन पर तोहफा देना क्यों ज़रूरी है? उसे जब जिस चीज़ की ज़रूरत लगती वह अब्बू या अम्मी से पूछ लेता। कभी उसे चीज़ मिल जाती और कभी न मिलती। कुलू कुछ देर सोचता रहा। फिर यह सोचना बन्द करके उसने कुछ और सोचना शुरू कर दिया। थोड़ी देर ही हुई थी कि उसने सुना, "कुलू, बेटा बता तुझे कुछ चाहिए?" उसे अचानक एक चीज़ सूझी। "हाँ, चाहिए।" उसने झट से जवाब दिया। "मुझे उल्टे पाँव के जूते चाहिए। यह होता क्या है वो मैं नहीं बताऊँगा पर मुझे तो बस उल्टे पाँव के जूते चाहिए।" खैर, बात आई-गई हो गई। जब कुलू का अगला जन्मदिन आया तब भी यही वाकया

हुआ। मामा ने पूछा, "कुलू, बोल बेटा तुझे क्या चाहिए?" थोड़ी देर सोचने के बाद उसने कहा, "मामा, अगर आप सचमुच ही मुझे कुछ देना चाहते हैं तो मुझे उल्टे पाँव के जूते ला दीजिए।" घण्टों लोग माथापच्ची करते रहे मगर समझ न पाए कि उल्टे पाँव के जूते यानी क्या। जब कुलू हॉकी की टीम में चुना गया तब भी उसकी एक दोस्त ने पूछा, "कुलू, बता तुझे क्या चाहिए?" उसने मुस्कुराकर कहा, "बस, मुझे तो उल्टे पाँव के जूते ही चाहिए।"

कुलू बड़ा हुआ। और अपने पाँवों पर खड़ा हो गया। उसकी एक बेटी थी। कूना नाम की। कूना को फुटबॉल खेलना पसन्द था। वह घण्टों फुटबॉल खेलती रहती। स्कूल की आधी छुट्टी हो तब भी फुटबॉल और पूरी हो तब भी। फुटबॉल न हो तब भी खड़े-खड़े वह पत्थर से ही खेलने लग जाती। एक दिन अब्बू ने उसे एक बहुत ही सुन्दर फुटबॉल ला दी। "मुझे दुनिया की सबसे अच्छी चीज़ फुटबॉल लगती है।" उसने अब्बू से कहा। और फिर पूछा, "अब्बू, आपको कौन-सी चीज़ सबसे अच्छी लगती है?" अब्बू ने झट से कहा, "मुझे तो बस उल्टे पाँव के जूते ही पसन्द हैं।" यह क्या होता है? और हमेशा की तरह अब्बू यानी कुलू ने इस बार भी जूतों के बारे में कुछ न बताया।

कुलू बूढ़ा हो गया था। और उसका अन्तिम समय करीब आ गया था। उसके दोस्त, रिश्तेदार सब उसके पास खड़े थे। वो बहुत खुश था। उसने कहा, "मैं बहुत खुश हूँ क्योंकि इस वक्त भी मैं अपने सब लोगों के करीब हूँ।" सभी के मन में एक ही बात चल रही थी कि कम से कम आज तो कुलू उल्टे पाँव के जूतों के बारे में बताए। कुलू के सबसे प्रिय दोस्त को यह काम सौंपा गया। दोस्त ने कुलू से पूछा, "यार, कुलू। आज हम तुम्हें तुम्हारा पसन्दीदा तोहफा देना चाहते हैं। लेकिन तुम्हें बताना होगा कि उल्टे पाँव के जूते आखिर क्या चीज़ है? और कहाँ मिलेंगे?" कुलू ने मुस्कुराकर कहा, "चलो, आज मैं तुम्हें बताता हूँ कि उल्टे पाँव के जूते क्या चीज़ है। उल्टे पाँव के जूते दरअसल .....।" इससे पहले कुलू कुछ कह पाता उसकी मौत हो गई।